ISSN-2230-7540

गुप्त काल में विज्ञान व प्रोद्योगिकी के विभिन्न चरण और उनका योगदान

Jamuna Lal Meena*

Lecturer,
Department of History,
Govt. College Karauli, Rajasthan

सार

गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग माना जाता है। इसे भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार, धार्मिक सहिष्णुता, आर्थिक समृद्धि तथा शासन व्यवस्था की स्थापना काल के रूप में जाना जाता है। मूर्तिकला के क्षेत्र में देखें तो गुप्त काल में भरहुत, अमरावती, सांची तथा मथुरा कला की मूर्तियों में कुषाण कालीन प्रतीकों तथा प्रारंभिक मध्यकालीन युग की नग्नता के मध्य अच्छे संश्लेषण तथा जीवतंता का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करती है। स्थापत्य के क्षेत्र में देवगढ़ का दशावतार मंदिर, भूमरा का शिव मंदिर बोध गया और सांची के उत्कृष्ट स्तूपों का निर्माण हुआ। चित्रकला के क्षेत्र में अजंता, एलोरा तथा बाघ की गुफाओं में की गई, चित्रकारी तथा फ्रेस्को चित्रकारी परिष्कृत कला के उदाहरण हैं। साहित्य के क्षेत्र में एक ओर कालिदास ने मेधदूतम्, ऋतुसंहार तथा अभिज्ञान शांकुतलम् की रचना की तो दूसरी ओर नाटक तथा कविता लेखन में एक नये युग की युरुआत हुई। विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में आर्यभट्ट ने जहाँ एक ओर पृथ्वी की त्रिज्या की गणना की और सूर्य-केंद्रित ब्रह्माण्ड का सिद्धांत दिया वहीं दूसरी ओर वराहमिहिर ने चन्द्र कैलेण्डर के शुरुआत की। गुप्तकाल में विज्ञान प्रौद्योगिकी से लेकर साहित्य, स्थापत्य तथा मूर्तिकला के क्षेत्र में नये प्रतिमानों की स्थापना की गई जिससे यह काल भारतीय इतिहास में "स्वर्ण युग" के रूप में जाना गया।

प्राचीन भारतीय विज्ञान तथा तकनीक

को जानने के लिये प्राचीन साहित्य और पुरातत्व का सहारा लेना पड़ता है। प्राचीन भारत का साहित्य अत्यन्त विपुल एवं विविधता सम्पन्न है। इसमें धर्म, दर्शन, भाषा, शिक्षा आदि के अतिरिक्त गणित, ज्योतिष, सैन्य विज्ञान, आयुर्वेद, रसायन, धातुकर्म, आदि भी वर्ण्यविषय रहे हैं।*[1]*

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में प्राचीन भारत के कुछ योगदान निम्नलिखित हैं*[2] [3]*

- गणित-वैदिक साहित्य शून्य के कांसेप्ट, बीजगणित की तकनीकों तथा कलन-पद्धति, वर्गमूल, घनमूल के कांसेप्ट से भरा हुआ है।
- खेल-शतरंज, लुडो, साँप-सीढ़ी एवं ताश के खेलों का जन्म प्राचीन भारत में ही हुआ।

ISSN-2230-7540

- ललित कला-वेदों का पाठ किया जाता था जो सस्वर एवं शुद्ध होना आवश्यक था। इसके फलस्वरूप वैदिक काल में ही ध्वनि एवं ध्वनिकी का सूक्ष्म अध्ययन आरम्भ हुआ।
- ज्योतिष-
- खगोलविज्ञान-ऋग्वेद *(2000* ईसापूर्व*)* में खगोलविज्ञान का उल्लेख है।
- भौतिकी-६०० ईसापूर्व के भारतीय दार्शनिक ने परमाणु एवं आपेक्षिकता के सिद्धान्त का स्पष्ट उल्लेख किया है।
- रसायन विज्ञान, इत्र का आसवन, गन्दहयुक्त द्रव, वर्ण एवं रंजकों *(dyes and pigments)* का निर्माण, शर्करा का निर्माण
- आयुर्विज्ञान एवं आयुर्वेद-लगभग ८०० ईसापूर्व भारत में चिकित्सा एवं शल्यकर्म पर पहला ग्रन्थ का निर्माण हुआ था।
- सैन्य विज्ञान
- सिविल इंजीनियरी एवं वास्तुशास्त्र-मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा से प्राप्त नगरीय सभयता उस समय में उन्नत सिविल इंजीनियरी एवं आर्किटेक्चर के अस्तित्व ककको प्रमाणित करती है।
- यांत्रिक एवं वाहन प्रौद्योगिकी – यान-निर्माण एवं नौवहन *(Shipbuilding – navigation)*-संस्कृत एवं पालि ग्रन्थों में अनेक क्रियाकलापों के उल्लेख मिलते हैं।
- धातुकर्म-ग्रीक इतिहासकारों ने लिखा है कि चौथी शताब्दी ईसापूर्व में भारत में कुछ धातुओं का प्रगलन *(स्मेल्टिंग)* की जाती थी।

गुप्त काल में विज्ञान

गुप्त काल में विज्ञान के विकास का पता चलता है। गुप्तकालीन विज्ञान के अंतर्गत मुख्यत: गणित, ज्योतिष और आयुर्वेद का विकास हुआ। आर्यभट्ट, वराहमिहिर और ब्रह्मगुप्त गुप्तकालीन वैज्ञानिक हैं जिन्होंने अपने ग्रन्थों में विज्ञान की विवेचना की। आर्यभट्ट का प्रसिद्ध ग्रन्थ आर्यभट्टीयम् है। उसने गणित को अन्य विषयों से मुक्त कर स्वतंत्र रूप दिया। उसके अन्य ग्रन्थ दशगीतिक सूत्र और आर्याष्टशतक हैं। आर्यभट्ट ने पृथ्वी को गोल बताया और उसकी परिधि का अनुमान किया। इस प्रकार आर्यभट्ट विश्व के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने यह स्थापित किया कि पृथ्वी गोल है। आर्यभट्ट ने ग्रहण का राहु-ग्रास वाला जन विश्वास गलत सिद्ध कर दिया। उसके अनुसार चन्द्र ग्रहण चन्द्रमा और सूर्य के मध्य पृथ्वी के जाने और उसकी चन्द्रमा पर छाया पड़ने के कारण लगता है। उसकी इन धारणाओं का वराहमिहिर और ब्रह्मगुप्त ने खंडन किया। आर्यभट्ट ने दशमलव प्रणाली की भी विवेचना की। आर्यभट्ट का शून्य, तथा दशमलव सिद्धान्त सर्वथा नयी देन थी। संसार के गणित इतिहास में आर्यभट्ट का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उसने वर्षमान निकाला जो कि टालेमी द्वारा निकाले हुए काल से अधिक वैज्ञानिक है।

आर्यभट्ट के बाद दूसरा प्रसिद्ध गुप्तकालीन गणितज्ञ एवं ज्योतिषी वराहमिहिर है। उसने यूनानी और भारतीय ज्योतिष का समन्वय करके रोमक तथा पोलिश के नाम से नये सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जिससे भारतीय ज्योतिष का महत्त्व बढ़ा। उसके छ: ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं - पंथ सिद्धान्तिका, विवाहपटल, योगमाया, बृहत्संहिता, वृहज्जातक और लघुजातक। पंचसिद्धांतिका में पाँच प्राचीन सिद्धान्तों *(*पैताभट्ट सिद्धान्त, वशिष्ट सिद्धान्त, सूर्य सिद्धान्त, पौलिश सिद्धान्त तथा रोमक सिद्धान्त*)* को बताया गया है। वराहमिहिर ने ज्योतिष शास्त्र को तीन शाखाओं में विभाजित किया – तंत्र *(*गणित और ज्योतिष*)*, होरा *(*जन्मपत्र*)* और संहिता *(*फलित ज्योतिष*)*। वराहमिहिर के बृहज्जातक को विज्ञान और कला का विश्वकोश माना गया है। वराहमिहिर के पुत्र पृथुयश ने भी फलित ज्योतिष पर षट्पञ्चशिका ग्रन्थ की रचना की। इस पर भट्टोत्पल ने टीका लिखी। आचार्य कल्याण वर्मा भी प्रमुख ज्योतिषाचार्य थे जिनका काल *600* ई. के लगभग माना गया है। इन्होंने यवन - होराशास्त्र के संकलन के रूप में सारावली नामक ग्रन्थ की रचना की।

ब्रह्मगुप्त भी गुप्तकालीन गणितज्ञ थे जिन्हें गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त का जनक माना गया है। इनका समय *598* ई. था। इन्होंने ब्रह्मस्फुटसिद्धांत

नामक ग्रन्थ की रचना की। ब्रह्मगुप्त ने बाद में खंडखाद्य और ध्यानग्रह की रचना की। उन्होंने न्यूटन से बहुत सी शताब्दियों पहले यह घोषित कर दिया था कि प्रकृति के नियमानुसार सारी वस्तुएँ पृथ्वी पर गिरती हैं क्योंकि पृथ्वी का स्वभाव सभी को अपनी ओर आकृष्ट करना है। कुडरंग, नि: शंकु और लाटदेव अन्य गुप्त - कालीन ज्योतिषी हैं। लाटदेव ने रोमक सिद्धान्त की व्याख्या की थी।

आयुर्वेद यद्यपि बहुत पुराना है तथापि इस पर गुप्त काल में ग्रन्थ लिखे गये। आयुर्वेद से संबंधित कई महत्त्वपूर्ण रचनाओं का प्रणयन हुआ। नालंदा विश्वविद्यालय में ज्योतिष और आयुर्वेद का अध्ययन होता था। चीनी यात्री इत्सिंग ने तत्कालीन भारत में प्रचलित आयुर्वेद की आठ शाखाओं का उल्लेख किया है। नवनीतकम् नामक ग्रन्थ भी है। इसमें प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रन्थों का सार है। इसमें रसों, चूर्णो, तेलों आदि का वर्णन है। इसके अलावा बालकों के रोग और निदान भी इसमें मिलते हैं।

इसी दौरान पशु चिकित्सा से संबंधित कई ग्रन्थों की रचना हुई जो घोड़ों व हाथियों से संबधित थे। भारतीय चिकित्सा ज्ञान का प्रसार पश्चिम की ओर हुआ तथा पश्चिमी एशिया के चिकित्सकों ने इसमें रुचि ली। गुप्तकाल का प्रसिद्ध रसायनशास्त्री एवं धातु विज्ञान वेत्ता नागार्जुन था। यह बौद्ध आचार्य था, जिसके प्रमुख ग्रन्थ हैं – लोहशास्त्र, रसरत्नाकर, कक्षपुट, आरोग्यमजरी, योगसार, रसेन्द्रमगल, रतिशास्त्र, रसकच्छा पुट और सिद्धनागार्जुन। अब तक जो चिकित्सा प्रणाली थी उसका आधार काष्ठ था। नागार्जुन ने रस चिकित्सा का आविष्कार किया। उसने यह अवधारणा प्रदान की कि सोना, चाँदी, तांबा, लौह आदि खनिज धातुओं में भी रोग प्रतिरोधक क्षमता होती है। पारद (पारे) की खोज उसका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आविष्कार था जो रसायन और आयुर्वेद के इतिहास की एक युगान्तकारी घटना थी। वाग्भट्ट ने भी आयुर्वेद के ऊपर प्रसिद्ध ग्रंथ अष्टांग-हृदय की रचना की। धन्वंतरि भी आयुर्वेद का प्रसिद्ध विद्वान् था। इसे चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की राजसभा का सदस्य माना गया। यह बहुमुखी व्यक्तित्व व असाधारण प्रतिभा का धनी था। धन्वंतरि को कई नामों से संबोधित किया गया है जैसे आदि देव, अमरवर, अमृतयोनि, अब्ज आदि। धन्वन्तरि को देवताओं का वैद्य कहा गया है। कहा जाता है कि धन्वंतरि समुद्र मंथन के फलस्वरूप अमृत हाथ में लिये हुए समुद्र से निकले थे। कुछ विद्वान् यह मानते हैं कि सुश्रुत संहिता के उत्तरवर्ती भाग की रचना किसी और लेखक ने की थी। नागार्जुन को भी इसका श्रेय दिया जा सकता है।

प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों ने अश्व, गज, गौ, मृग, शेर, भालू, गरुड़, हंस, बाज आदि से संबंधित विस्तृत अध्ययन किया। विभिन्न ग्रन्थों में इनका विवरण उपलब्ध है। पालकाप्य कृत गजचिकित्सा, बृहस्पति कृत गजलक्षण आदि ग्रन्थ पशु-चिकित्सा पर हैं। वाग्भट्ट भी गुप्तकालीन रसायन-शास्त्री था जिसका ग्रन्थ रसरत्न समुच्चय भी उल्लेखनीय है।

साहित्य

गुप्त काल धर्मनिरपेक्ष साहित्य के उत्पादन के लिए उल्लेखनीय है, जिसमें अलंकृत अदालत कविता की एक उचित डिग्री शामिल है। गुप्त काल के शुरुआती दौर में भास एक महत्वपूर्ण कवि थे और उन्होंने तेरह नाटक लिखे। उन्होंने संस्कृत में लिखा, लेकिन उनके नाटकों में पर्याप्त मात्रा में प्राकृत भी हैं। वह द्रदिराचारुदत्त नामक एक नाटक के लेखक थे, जिसे बाद में मृच्छकटिका या शूद्र द्वारा लिटिल क्ले कार्ट के रूप में फिर से प्रकाशित किया गया।

यह नाटक एक गरीब ब्राह्मण व्यापारी के प्रेम संबंध के साथ एक सुंदर सौजन्य से पेश आता है, और इसे प्राचीन नाटक की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक माना जाता है। अपने नाटकों में भासा पर्दे के लिए यवनिका शब्द का उपयोग करता है, जो ग्रीक संपर्क का सुझाव देता है। हालाँकि, गुप्त काल ने विशेष रूप से प्रसिद्ध कालिदास का काम किया है जो चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध में और पाँचवीं शताब्दी के पहले भाग में रहते थे। वे शास्त्रीय संस्कृत साहित्य के सबसे बड़े कवि थे और उन्होंने अभिज्ञानशाकुन्तलम लिखा, जिसे विश्व साहित्य में बहुत माना जाता है।

यह राजा दुष्यंत और शकुंतला की प्रेम कहानी से संबंधित है, जिसका बेटा भरत एक प्रसिद्ध शासक के रूप में दिखाई देता है। शकुंतलम यूरोपीय भाषाओं में अनुवादित होने वाले सबसे पहले भारतीय कामों में से एक था, दूसरा काम भगवद्गीता है।

गुप्त काल के दौरान भारत में निर्मित नाटकों में दो सामान्य विशेषताएं हैं। सबसे पहले, वे सभी हास्य हैंय कोई त्रासदी नहीं मिली है। दूसरे, उच्च और निम्न वर्ग के पात्र एक ही भाषा नहीं बोलते हैंय इन नाटकों की विशेषता वाली महिलाएं और शूद्र प्राकृत का उपयोग करते हैं जबकि उच्च वर्ग

ISSN-2230-7540

संस्कृत का उपयोग करते हैं। हम याद कर सकते हैं कि अशोक और सातवाहनों ने प्राकृत को राज्य भाषा के रूप में इस्तेमाल किया था।

यह अवधि धार्मिक साहित्य के उत्पादन में वृद्धि को भी दिखाती है। अधिकांश काल के कार्यों में एक मजबूत धार्मिक पूर्वाग्रह था। रामायण और महाभारत नामक दो महान महाकाव्य, लगभग चौथी शताब्दी ई.पू. यद्यपि महाकाव्यों और पुराणों को ब्राह्मणों द्वारा संकलित किया गया लगता है, वे क्षत्रिय परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे मिथकों, किंवदंतियों और अतिशयोक्ति से परिपूर्ण हैं। वे सामाजिक विकास को दर्शा सकते हैं लेकिन राजनीतिक इतिहास के लिए भरोसेमंद नहीं हैं। रामायण राम की कहानी से संबंधित है, जिसे उनके पिता दशरथ ने अयोध्या राज्य से चौदह साल के लिए अपनी सौतेली माँ कैकेयी के वचनों के कारण भगा दिया था। उसने अपने पिता के आदेशों को ईमानदारी से निभाया और एक जंगल में रहने चला गया, जहाँ से उसकी पत्नी सीता का अपहरण लंका के राजा रावण ने किया था।

आखिरकार सुग्रीव की मदद से राम सीता को बचाने में सफल हुए। कहानी में दो महत्वपूर्ण नैतिक किस्में हैं। सबसे पहले, यह परिवार की संस्था को आदर्श बनाता है जिसमें एक बेटे को अपने पिता का पालन करना चाहिए, छोटे भाई को अपने बड़े भाई का पालन करना चाहिए, और पत्नी को हर परिस्थिति में अपने पति के प्रति वफादार रहना चाहिए। दूसरा, रावण बुराई के बल का प्रतीक है, और राम ने धार्मिकता का बल। अंत में, धार्मिकता बुरी ताकतों पर विजय प्राप्त करती है, और बुरी व्यवस्था पर अच्छा आदेश।

राम की कहानी में महाभारत के मुख्य आख्यान की तुलना में अधिक व्यापक सामाजिक और धार्मिक अपील थी। सभी महत्वपूर्ण भारतीय भाषाओं में और दक्षिण पूर्व एशिया में भी रामायण के कई संस्करण हैं।

महाभारत मूल रूप से चचेरे भाइयों के दो समूहों, कौरवों और पांडवों के बीच संघर्ष की कहानी है। यह दर्शाता है कि राजशाही कोई रिश्तेदारी नहीं जानता है। हालाँकि धृतराष्ट्र द्वारा शासित राज्य में पांडव अपने हिस्से के हकदार थे, लेकिन कौरवों ने उन्हें एक इंच भी क्षेत्र देने से इनकार कर दिया। इसके चलते पांडवों के बीच लंबे समय तक भयावह युद्ध चला, जो कृष्ण द्वारा संरक्षण में थे, और कौरव अपने दम पर लड़ रहे थे।

आखिरकार युद्ध में कौरव सबसे खराब हो गए, और पांडव विजयी हुए। यह कहानी बहुत बुरी शक्तियों की धार्मिकता की जीत का प्रतीक है। भगवद्गीता महाभारत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह सिखाता है कि किसी व्यक्ति को उसकी जाति द्वारा सौंपे गए कर्तव्यों को पूरा करना चाहिए और बिना किसी इच्छा के सभी परिस्थितियों में रैंक करना चाहिए।

पुराण महाकाव्यों की पंक्तियों का अनुसरण करते हैं, और पहले वाले अंततः गुप्त काल में संकलित किए गए थे। वे मिथकों, किंवदंतियों, उपदेशों आदि से भरे हैं, जो आम लोगों की शिक्षा और संपादन के लिए थे। इस अवधि में विभिन्न स्मिट्रिट या लॉबुक का संकलन भी देखा गया था जिसमें सामाजिक और धार्मिक मानदंडों को कविता में लिखा गया था। स्मिट्रिट पर टिप्पणी लिखने का चरण गुप्त काल के बाद शुरू होता है।

गुप्त काल ने पाणिनि और पतंजलि के कार्य के आधार पर संस्कृत व्याकरण के विकास को भी देखा। अमरसिंह द्वारा अमरकोश के संकलन के लिए यह काल विशेष रूप से स्मरणीय है, जो चंद्रगुप्त द्वितीय के दरबार में प्रकाशमान था। यह लेक्सिकन दिल से पारंपरिक तरीके से संस्कृत सीखने वाले छात्रों द्वारा सीखा जाता है।

कुल मिलाकर, गुप्त काल शास्त्रीय साहित्य के इतिहास में एक उज्ज्वल चरण था और एक ने एक अलंकृत शैली विकसित की थी जो पुरानी सरल सं स्कृ त से अलग थी। इस अवधि के बाद से हम गद्य की तुलना में पद्य पर अधिक जोर देते हैं, और कुछ टिप्पणियों पर भी। संस्कृत निस्संदेह गुप्तों की दरबारी भाषा थी, और हालाँकि इस अवधि ने बहुत से ब्राह्मणवादी धार्मिक साहित्य का निर्माण किया, लेकिन इसने धर्मनिरपेक्ष साहित्य के कुछ शुरुआती टुकड़ों को भी जन्म दिया।

विज्ञान और तकनीक:

गणित में, अवधि ने देखा, पांचवीं शताब्दी में, आर्यभट्ट द्वारा लिखित एक काम आर्यभट्ट ने लिखा था जो पाटलिपुत्र के थे। ऐसा प्रतीत होता है कि यह गणितज्ञ विभिन्न प्रकार की गणनाओं में पारंगत था। आर्यभट्ट शून्य प्रणाली और दशमलव प्रणाली दोनों के बारे में जागरूकता प्रदर्शित करता है।

ISSN-2230-7540

इलाहाबाद जिले से एडी *448* के एक गुप्त शिलालेख से पता चलता है कि दशमलव प्रणाली भारत में पांचवीं शताब्दी की शुरुआत में जानी जाती थी। एस्ट्रोनॉमी के क्षेत्र में, रोमाका सिद्धांता नामक एक पुस्तक संकलित की गई थी, इसका शीर्षक यह दर्शाता है कि यह ग्रीक और रोमन विचारों से प्रभावित थी।

गुप्त कारीगरों ने अपने काम से लोहा और कांस्य में अलग पहचान बनाई। बुद्ध के कांस्य चित्र काफी बड़े पैमाने पर निर्मित होने लगे क्योंकि ज्ञान में स्मिथियों में उन्नत धातु प्रौद्योगिकी थी। लोहे की वस्तुओं के संबंध में, सबसे अच्छा उदाहरण दिल्ली के महरौली में पाया जाने वाला लौह स्तंभ है।

चौथी शताब्दी के विज्ञापन में निर्मित, स्तंभ ने बाद की पंद्रह शताब्दियों से किसी भी जंग को इकट्ठा नहीं किया है जो शिल्पियों के तकनीकी कौशल के लिए एक महान श्रद्धांजलि है, हालांकि दिल्ली में शुष्क परिस्थितियों ने भी इसके संरक्षण में योगदान दिया हो सकता है। लगभग एक सदी पहले तक पश्चिम में किसी भी लोहे की ढलाई में इस तरह के स्तंभ का निर्माण करना असंभव था। यह अफसोस की बात है कि बाद के भारतीय शिल्पकार इस ज्ञान को और विकसित नहीं कर सके।

उपसंहार

गुप्तकाल में समाज, धर्म, कला, साहित्य व विज्ञान के विकास के साथ ही एक मजबूत आर्थिक ढाँचे का गठन हुआ। विभिन्न क्षेत्रों में गुप्तकाल की उपलब्धियों के कारण ही इसे क्लासिकल एज की संज्ञा दी गई है। गुप्तकाल के सांस्कृतिक विकास में इसकी आर्थिक समृद्धि का प्रमुख योगदान रहा है। कृषि, उद्योग और व्यापार में इस काल में काफी वृद्धि हुई। कई इतिहासकारों ने गुप्तकाल के अंतिम चरण में सामंतवाद का उदय बताया है और सामन्तीय व्यवस्था को देश की अर्थव्यवस्था के विघटन का संकेत माना जाता है। गुप्तकाल क्लासिकल युग था अथवा अर्थव्यवस्था के धीरे-धीरे ह्रास का काल, यह एक अत्यन्त विवादास्पद तथ्य है। कृषि-सामान्यतः भूमि पर कृषक का ही स्वामित्व माना जाता है। मनु और गौतम जैसे स्मृतिकारों ने राजा को भूमि का स्वामी माना है, परन्तु मनु दूसरी जगह कहते हैं कि भूमि उसकी होती है जो उसे आबाद करता है। दूसरी तरफ बृहस्पति और नारद भूमि का स्वामी उसे मानते हैं जिसके पास कानूनी दस्तावेज हो। शबरस्वामि के अनुसार साधारण मनुष्य खेत के स्वामी होते हैं। राजा भी पूरी भूमि का स्वामी नहीं होता है, उसकी भी निजी भूमि होती है। प्राचीन काल में राजा सामान्यतः उपज के *1/6* भाग का अधिकारी माना गया है। यह भाग प्रजा की सुरक्षा करने के लिए, राजा को प्रजा द्वारा प्रदान किया जाने वाला कर था। राजा अपनी निजी भूमि में से ही भूदान आदि करता था। राजा द्वारा लिया जाने वाला कर भाग, भोग कर आदि कहलाता था। लगान के निर्धारण व की प्रतिष्ठा के संदर्भ में व्यापक विवरणों का अभाव है। कर के निर्धारण में भूमि की प्रकृति का ध्यान रखा जाता होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. जायसवाल काषी प्रसाद: हिस्ट्री ऑफ़ इण्डिया
2. प्लीट जे.एफ.: कॉर्पस इंस्क्रिप्षनम इण्डिकेरम, जिल्द *3* (गुप्त अभिलेख)
3. मजूमदार आर.सी. और पुसाल्कर: दि वलैसिकल एज
4. बनर्जी आर.डी.: दी एज ऑफ़ दी इम्पीरियल गुप्ताज्
5. अल्तेकर अ.स.: गुप्त मुद्राएँ
6. स्मिथ वी.ए.: अर्ली हिस्ट्री ऑफ़ इण्डिया
7. उपाध्याय वासुदेव: गप्त साम्राज्य का इतिहास, भाग-*2*
8. सालाटोर: लाइफ ड्यूरिंग दी गुप्त एज

ISSN-2230-7540

9. Goyal, S.R. : A History of the Imperial Guptas, Allahabad, *1967*

10. Pargiter, F.E. : Ancient Indian Historical Tradition, Delhi *1996*

Corresponding Author

Jamuna Lal Meena*

Lecturer, Department of History, Govt. College Karauli, Rajasthan

GNITED MINDS Journals